जनवरी 2025 | पोष वद-3
वि.सं. 2081 | युगाब्ध 5126
वर्ष 10 • अंक 95
वार्षिक शुल्क रु. 150/-
प्रत रु. 15/-

समरसता से ही राष्ट्ररक्षा

# समरसता सेतु

संपादक : देवजी रावत

पू. शंकर स्वामी - कृति रूप समरसता

द. कर्णाटक

द. गुजरात

## समरसता का प्रतिक

## प्रयागराज कुम्भ २०२५

द. कर्णाटक

जम्मु-कश्मिर लद्दाख

उ. गुजरात

# समरसता यात्रायें

# सामाजिक समरसता यात्रायें.....

तेलंगणा - विकाराबाद जिला “तांडूर” श्री मनिकेश महासंस्थानम् पीठाधीश श्री शंकर स्वामी जी द्वारा आयोजित समानता ही सनातन धर्म“ कार्यक्रम इतिहास में प्रथमवार १०८ दलित समुदाय की बहनों का पू. शंकर स्वामी श्री ने पादपूजा किया दिनांक ८-१२-२०२४ तुलती गार्डन में आयोजीत हुआ।

पश्चिम ओड़िसा समरसता यात्रा समापन कार्यक्रम दिनांक १६-११-२०२४

उत्तर गुजरात समरसता यात्रा समापन कार्यक्रम दिनांक २१-१२-२०२४ कड़ी

दिनांक १५-१२-२०२४ समरसता रथ यात्रा जगत प्रसिद्ध चामुंडी माता मंदिर से सेंकडो कार्यकर्त-धर्म प्रेमि जनता तथा पूजनीय संतो की उपस्थितिमें यात्रा का प्रारंभ हुआ।

जम्मु-काश्मीर लदाख दिनांक १५-१२-२०२४ समरसता यात्रा कठुवासे प्रारंभ हुआ।

समरसता यात्रा दिनांक १-१-२०२५ अवध प्रान्त ऊन्नावसे प्रारम्भ हुआ।

संपादकीय

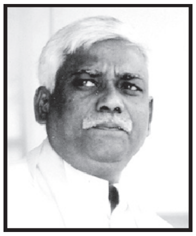

**परम स्नेहीश्री, कार्यकर्ता,**
**बहेनो/भाईयो,**
**सादर प्रणाम,**

# "समरसता का प्रतिक प्रयागराज कुम्भ-2025"

समरसता का प्रतिक प्रयागराज कुम्भ परंपरागत रिति से आयोजित जनवरी 2025 होने वाला है। कालान्तर भारत में अनेक प्रकार के विचार मंथन हो चूके है। यह लाखो वर्षो से लगने वाला यह कुम्भ एसे ही समाज को नई दिशा - सामाजिक चिंतन - संस्कार तथा युगानुकुल विषयो का विचार-विमर्श-मंथन करने वाला यह कुम्भ उपर प्रदेश की प्रयागराज भूमि पर 14 जनवरी, 2025 मकर संक्रांत से शुभारंभ हो चुका है।

यह प्रयागराज कुम्भ भारतकी संस्कृति, अध्यात्म और पौराणिक धरोहरों का अदभूत संगम लेकर आया है। कुम्भ के हरेक स्थानो पर आस्था की झलक दिखती है। विशाल डमरू, दुनिया का श्रेष्ठ बड़ा त्रिशूल तथा भव्य कलाकृतियाँ इस कुम्भ में लोगों के आकर्षण केन्द्र बने है। रास्तो पर बनी तस्वीरें भारतीय इतिहास और धर्म की गहराई दर्शाति है। देशी-विदेशी लाखो लोग कुम्भ में आकर इस दिव्यता को अनुभव करते हैं।

**वर्ष - १०** समरसता से ही राष्ट्ररक्षा समरसता सेतु **अंक - ९५**

| | |
|---|---|
| संपादक | : श्री देवजीभाई रावत |
| सहसंपादक | : भारत कोठीवाला, चिराग पटेल |
| संरक्षक | : प.पू.महंत श्री १००८ शंभुनाथ महाराज - झांझरका, गुजरात (पूर्व सांसद राज्य सभा)<br>मा. विनायकरावजी देशपांडे - अ.भा.संगठन स.महामंत्री वि.हि.प.<br>मा. श्री मधुभाई कुलकर्णी अ.भा.कार्य कारणी सदस्य RSS<br>मा. श्री इन्द्रेशकुमार अ.भा. कार्य कारणी सदस्य RSS<br>श्री नरेश पाटील - मुंबई क्षेत्र समरसता प्रमुख<br>श्री अशोकभाई रावल - क्षेत्रीय मंत्री, वि.हि.प.(गुजरात)<br>श्री अश्विनभाई पटेल - क्षेत्रीय सह मंत्री वि.हि.प. (गुजरात) |
| हिन्दी परामर्शदाता | : श्री डॉ. धर्मनारायण भारद्वाज (चित्तोड़) |
| कानूनी परामर्शदाता | : श्री हसमुखभाई पटेल (अधिवक्ता - गु.हा.कोर्ट) |
| प्रचार-प्रसार-मिडीया | : श्री दिपक मिस्त्री (संयोजक) |
| व्यवस्था | : श्री रमेशकुमार |

**संपर्क - पत्र व्यवहार**
**धर्मादा होस्पिटल, गांधी आश्रम के पास, अमदावाद - 380 027. गुजरात.**
**संपर्क : मो.: 08980000327**
**E-mail : samrastasetu2010@gmail.com • Web : http:/vhp.org**

कुम्भ के बारे में पुराणों में कहा है कि समुद्र मन्थन सभी देवो था दैत्यों ने साथ मिलकर किया था, अमृत पीकर अमरता पाने के लि देव और दैत्य ने एक साथ सहयोग कर अपनी संगठीत शक्ति लगाकर समुद्ध मन्थन किया। संपूर्ण विश्व का कल्याण करने वाली संस्कृति से ही यह संभव था इस हेतु भगवान शिवशंकर ने 'समुद्धमंथन' से निकल ने वाले विष को समाजहित कार्य अपने गले में धारण कीया। बारह वर्षो में कुम्भ पर्व छह वर्षो में अर्धकुम्भ पर्व आयोजित लाखो वर्षो से निरंतर आयोजित होता है। पुराणों में कहा है आठ स्थानो पर समुद्र मंथन के दौरान "अमृत कण गिरे" थे। मानव-समाज हित अमृत कणों को धारण करने के धरती पर दो स्थानो पर 12 वर्षो में 'महाकुम्भ' होता है। ये है हरिद्वार और प्रयागराज। हरिद्वार मायानगरी कही जाति है। वहाँ पावन गंगा समतल में आती है। हरिद्वार के कुम्भ में स्नान कर मनुष्य का समभाव जागे यही पावन विचार प्रयागराज कुम्भ का है। प्रयागराज में समादर - समरसता का भाव जाग ऊठे तो मानव भगवान की सर्वोत्तम रचना है, यह आभास स्वयं करने लगता है। उज्जैन महाकाल भोले भगवान शिव की नगरी है। इस स्थान पर कुम्भ आयोजन भगवान शिव-शंकर समस्त विकारों, कुविचारों, तमस के अवगुण से मुक्ति देते है। यदि श्रद्धालु के मन में सर्वकल्याण का भाव निहित है तो वह प्राप्ती अवश्य कर सकता है। नाशिक के कुम्भ में व्यक्तिका अहंकार और कपट दूर होता है। निर्विकार मनुष्य समाज के लिए अमूल्य कर्ता बनकर ऊभरता है।

कुम्भ पर्व हर वर्ग - हर स्तर के लिए है। निरक्षर से विध्वान तक, निर्धन-दरिद, से राजा तक सांसरिक व्यक्ति से विरागी तक, तपस्वी योगी तक सबका है। छल कपट से बचकर समरसता की राह दिखाता है, कुम्भ जो कालजयी है। कुम्भ स्वार्थ, संकीर्णन से मुक्ति दिलाता है। कुम्भ के पावन अवसर पर स्नान से यज्ञ के समान पुण्य प्राप्त होता हैं। विष्णु पुराण में भी कुम्भका उल्लेख है। कुम्भ को लेकर शास्त्रों पुराणों की ये कथायें एनेक प्रकार से धार्मिक आस्था की पुष्टी करती हैं। इसे प्रारंभ करने वाले ऋषि ही थे, जो महान विद्वान - समाज कर्ता तथा भारतीय संस्कृति के पुरोधा थे।

हम सब सनातनियों को मिलकर हमारे पूर्वजो की यह अद्वितीय अदभूत विरासत लाखो वर्षो से निरंतर चली आ रही है। उसे वर्तमान समय में सनातन के विरोधीयों ने उसके सामने एनेक चुनौतियाँ खडी कर उसे नष्ट करने के कुचक्र वर्तमान देशमें चल रह है इस पवित्र कुंम्भ - परंपरा को बचाने का हम सब सनातनीयों का ही दायित्व है। यह समजकर हम सब "एक है तो सुरक्षित है" – संगठीत-जागृत होकर इस धरोहर को बचाने के प्रयाश में लगना होगा।

देवजी २१५७

# भक्ति आन्दोलन और समरसता

– डॉ. श्यामा घोणसे

दिन-प्रतिदिन तीव्रगति से हो रहा है नैतिकता का ह्रास, सीमा भेद, प्रान्त भेद, और बढ़ती जातीय अस्मिता के कारण खोखला बन रहा यह भारतीय समाज असंस्कृत स्वार्थंध जीवन इनके कारण जन्म लेने वाली संवेदनाशून्यता वर्तमान काल की विशेषतायें बनने लगी हैं। इस "रावण वृत्ति के खिलाफ आवाज उठा हो तो जनमानस में छिपे "राम" को फिर एक बार जगाना पड़ेगा। उन्हें फिर से एकात्मक्ता, स्वत्व, स्वाभिमान स्वभाष का स्मरण दिलाना आवश्यक होगा। इसके लिए उनके मन में भारतीय एकात्मता के आय प्रणेताओं जनतन्त्र मानवतावाद के सच्चे पुरस्कर्ताओं की स्मृति जाग्रत करना जरूरी है और यह पुरस्कर्ता है भारत के विभिन्न प्रान्तों के भक्त या सन्त।

इस शोध अत्येव की मर्यादा का भी मुझे पालन करना है। इसलिए मैं बस इतना ही कहना उचित समझूगीं की सन्त हो या भक्त संज्ञा भारती लोगो के लिए एक समान ही श्रद्धेय है। यह आवश्यक नहीं की सन्त उसे ही कहा जाय जो निर्गुण ब्रह्म का उपासक हो। इसके अन्तर्गत लोकमंगल विचार धारा सभी सत्पुरूष भक्त आ जाते है। सन्त याने सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाले लोक परोपकारी पुरूष उसका लोक हित कर कार्य ही उसके सन्तत्व का मानदंड होता है। उस सन्दर्भ में भारत में सन्त या भक्त किसे कहा गया यह जानना भी जरूरी है। इसे इसी में भक्ति आन्दोलन का यश समाया है। भक्ति अन्दोलन के करते मानव होते हुये भी मानव से परे असामान्य है। सभी तरह के प्रतिकूल स्थित का सामना करते हुये अध्यात्मिक ऊचाई पर पहुँचे दिखाई देते है। ये अनुभूति सारे भक्त सन्तानों ने पायी हैं। वे-बुनियादी चर्चा में उन्होंने कभी रस नहीं लिया। उन्होंने हकीकत को भी नकारा नहीं। फिर भी उन्होने घर की जिस संकल्पना को स्वीकारा वह मात्र आत्मकेन्द्रित, वैयक्तिक सुख-साधन तथा स्वार्थ तक मर्यादित नही थी। उस घर में वह ताकत थी जो सभी चरिदों परिदों तक समा सकें। वे सही अर्थ में 'महामने' थे। 'सांई इतना दीजिए जा में कुटुम्ब समाय। मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय-सभी में यही कबीर वृत्तीथी। यह जानना होगा कि संतों में जिस काल में यह कार्य किया वह काल महत्वपूर्ण हो। एक तरफ वह काल जिसमें सन्त जाति श्रेष्ठता पर आधारित था। दूसरी तरफ वह यहाँ की मिट्टी के समन्वयशील मानसिकता के साथ मेल न खाने वाली हिंसा प्रवृत्ति के धर्मांध इस्लामी आक्रमण तथा सत्ता के वर्चस्व से दबा था। ऐसी व्यवस्था में शांति, सदाचार, तथा परमार्थ का आधार लेकर संत भक्तों ने मनुष्य के अन्दर छिपे देवत्व को जगाने का काम किया। लोकभाषा, लेखक कीर्तन-प्रवचनों जैसे लोक-माध्यमों के जरिए उन्होंने जन प्रबोधन किया। उनके अदंर स्थायी रूप में छिपे स्वत्व स्वाभिमान संस्कृति को पुकार हम सभी विश्वात्मक भगवान के अंश है। यही भक्तिभाव इस भूमि में एकाकार हुआ। हिन्दू-मुस्लिम, स्त्री-पुरूष, जाति वंश, प्रदेश से परदे इन बाधाओं पर मात करने वाली विधायक भारतीय ऊर्जा एकाकार हुई और अनेक आक्रमणो का सामना करके भी यह खंडप्राय भारत अखंड रहा। मानव धर्म में होने वाली अटूट विश्वास यह संत भक्तों के शक्ति का मर्म था। उन सबका सूत्र था जाति पांति पूछे नहि कोई। हरि को भजे सो हरि का होई।

इसलिए भक्ति क्षेत्र में आपकी जाति आपका श्रीमंत गरीब होना या आप उच्चे या नीचे वर्ण के हो यह सब बाते फिजूल हो जाती है। यहाँ लिंगभाव ही खत्म हो जाता है। क्यों कि पृथ्वीवरी जितुकी शरीरे। जितुकी भगवंताची घी होती है। संत/भक्त सब तरह के भेदभाव से परे हो गये थे। ऐसा क्युँ हुआ होगा। कहीं से ऐसा हुआ होगा। इसके मूल तक पहुँचने पर दिखाई दिया कि भक्ति आंदोलन की मूल प्रेरणा हिन्दू धर्म की विशेषता में छपी है। संक्षेप में कहे तो हिन्दू धर्म खुला स्त्रोत धर्म है। इसके विचार लगातार विकसित होते हैं। एक तरफ कर्मकांड से वृद्ध लगने वाला धर्म असल में विभिन्न संस्कृतियों एवं परम्पराओं का संमिश्रण है। जिसका काई संस्थापक नहीं है। यह धर्म अपने अन्दर कई अलग-अलग उपासना पद्धतियों, मत, सम्प्रदाय और दर्शन समेटे हुये है। इसलिए हिन्दुत्व केवल एक धर्म या सम्प्रदाय ही नहीं अपितु जीवन जीने की एक पद्धति हैं। एक जीवन मार्ग है। इसके अंतर्गत कई मत, सम्प्रदाय आते है और सभी को बराबर श्रद्धा दी जाती है। धर्मग्रथ भी कई है। हिन्दू धर्म सिद्धान्त के कुछ मुख्य विन्दु जैसे ईश्वर एक नाम अनेक, परोपकार पुण्य हैं। दूसरो को कष्ट देना पाप है। जीव मात्र की सेवा में परमात्मा की सेवा है। हिन्दुत्व का वास हिन्दु के मन संस्कार और परम्परा में बसा है। हिन्दू दृष्टि समतावादी एवं समन्वयवादी है। संतो भक्तो ने अपने कार्यो में इस बिन्दुओ को परिपोषितउनका विस्तार किया। परिणमतः भक्ति आंदोलन हिन्दुत्व को परखने की, हिन्दु धर्म को गति देने का विधी विधान बना। संतों की शिक्षा से मध्युग में भक्तिसाहित्य का ही नहीं अपितु हिन्दुत्व विचार धरोहर का सुवर्णयुग बना।

भक्ति आंदोलन का आरंभ दक्षिण भारत में आल्वारों एवं नायन्मारे भक्त संतों से हुआ, जो कालन्तर मे उत्तर भारत सहित संपूर्ण दक्षिण एशिया में 800 ई. से लेकर 1700 ई. के बीच फैल गया। इस जांदोलन में आल्वार-नायन्मारों से लेकर म. बसवेश्वर और उनके अनुभवमंडप निवासी वीरशैवजन, रामनुजाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, महाराष्ट्र से संत ज्ञानेश्वर, उत्तर भारत के संत परंपरा के कुलपुरूष माने जाने वाले सन्त नामदेवराय, संततुकाराम, समर्थ रामदास, पंजाब में गुरू नानक जी उत्तर भारत में कबीर दास, रविदास, गुजरात में नरसी मेहता, आसम में शंकर

देव जी एकना अनेक उनके साथ साथ नारी शक्ति ने भी इस आंदोलन को तेजस्वी आयाम अपने कार्यकर्तृत्व से बहाल किया जिसमें तमिल संत कावयित्री आंदाल, कर्नाटक की अक्क मशदेवी और करीब चालिस के आरूपा अन्य शिवशरजी, मीराबाई, महाराष्ट्र से मुकनाई, लनाई, सोयररवा बेजाबाई-यहाँ सबका नाम निर्देश नहीं कर सकती इसलिए क्षमस्य साररूप में कहें तो यह आंदोलन सर्वव्यापी, सर्व प्रदेशों के व्याप्त करने वाला है । इसमें समाज के सभी वर्गो-निम्न जातियों, ऊँची जातियों, स्त्री-पुरूष, विभिन्न बोली भाषाएँका प्रतिनिधीत्व रहा ।

भक्ति आंदोलन के प्रभाव से जो साहित्य निर्मित हआ वे केवल भक्ति भावना तक सीमित नहीं है । इस साहित्य से जनता के हृदय में श्रद्धा, भक्ति विश्वास, जिजिविषा जागृत की । इस आंदोलन के द्वारा हिन्दू धर्म ने इस्लाम के प्रचार, जोर-जबरदस्ती एवं राजनैतिक हस्ताक्षेप का शन्तिपूर्ण, संयमित लेकिन कड़ा मुकाबला किया । जनता जनार्दन में साहस उल्लास, प्रेमभाव और सबसे महत्वपूर्ण बात करे तो मानवता वाद का जागरण किया । अपनी मातृभूमि, इसकी संस्कृति का विराट एवं उत्साहवर्धक चित्र प्रस्तुत किया, लोगों के हृदय में देशप्रेम भी प्रकारंतर से इसी कारण जागृत हुआ । अनेक विद्वानों की जो मान्यता है **हिमात्वयात समारभ्य यावत इन्दु सरोवरम । तं देवनिर्मित देशं हिन्दुस्थान प्रचक्षतें ।।**

अर्थात् हिमालय से प्रारंभ होकर सिन्धु झील (हिन्द महासागर) तक यहीं ईश्वर निर्मित देश को हिन्दूस्थान कहा जाता है । प्रारंभ से ही हिंदू शब्द का प्रयोग राष्ट्रीयता के बजाय धर्म के रूप में किया जाता था, भक्ति आंदोलन ने इस मान्यता पर अपनी सामाजिक शक्ति की मुहर लगाई । संतो-भक्तों की विशेषता यह थी कि वे परंपरावादी होते थे प्रत्येक ज्ञान का आँखमूद कर वे समर्थन नहीं करते अपितु उसके कालेचित मानवहितवर्धक अर्थ प्रदान करते है । इनके चिंतन का आकार सर्वमानववाद है । इनका कहना है कि कोई भी व्यक्ति अपने कुलविशेष के कारण के करण किसी प्रकार का वैशिष्ट्य लिए हुये उत्पन्न नहीं होता । इस अर्थ से सारे संत भक्त समरसता के कुलपुरूष है ।

आज के सन्दर्भ में चिंतन-मनन करे तो सामाजिक समरसता भारतीय समाजशास्त्र की प्रासंगिकता का प्रश्न बना है । समाजशास्त्र के स्वदेशीकरण की आवश्यकता पर भी निरंतर बात वल देने वाला विचार है भक्ति आंदोलनमें प्रगटी समरसता । हिन्दुत्व विकास प्रक्रिया का महत्वपूर्ण पड़ाव याने समरसता इसलिए दिल्ली स्थित व्याख्यान में 24 नवम्बर 1947 डॉ० बाबासाहेब आंबेडकर जी ने सामाजिक "समरसता के बिना समता नहीं "इस विचार का प्रकटीकरण किया होगा । अर्थात समरसता का अर्थ सामाजिक समानता है । परन्तु समरसता मात्र समानता नहीं है । वह केवल समता से याने अर्थिकता से बिगड़ित नहीं है । इसका निहतार्थ है आत्मवत् सर्वभूतेषु अर्थात् सभी को अपने समान समझ कर किया जाने वाला आत्मीयता का व्यवहार इस अर्थ में समरसता का दर्शन केवल आध्यात्मिक दर्शन नहीं है, संगठित समाज का व्यवहारिक चिंतन भी है । समरसता में सबका सम्मान और सबसे आत्मीयता पूर्ण आदरयुक्त व्यवहार अपेक्षित है । आधुनिक सन्दर्भ में इस विचार को प्रतिपादन और व्यावहारिक प्रगटीकरण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा किया गया है । संघ परिवार निष्ठापूर्ण समाजिक समरसता संज्ञा को अपनी कार्य से साकार किया । जातिपाति के परे जाकर "वयं हिन्दुराष्ट्रांग भूता" अर्थात् हम हिन्दु राष्ट्र के एक अंग है । ऐसा विधायक दृष्टिकोण लेकर पूजनीय डॉ. हेडगेवार जी ने राष्ट्रीय स्वंयसेवक के रूप में सामाजिक समरमता का आधुनिक रूप विश्व के सामने प्रस्तुत किया । संघ का सामाजिक समरसता का विचार भक्ति आंदोलन के अक्षुण्ण नींव पर आधारित है । संत-भक्त जैसे चरित्र सम्पन्न विभूतीयों के त्याग पर बँधे है । इसलिए या आश्चर्य की बात नहीं हो सकती की संघ प्रणित सामाजिक समरसता का उद्देश जातीय भेदभाव एवं अस्पृश्यता का जड़मूल से उन्मूलन कर लोगो में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द बढ़ाना है । इसका लक्ष्य समाज के सभी वर्षों एंव वर्गो के मध्य एकता स्थापित करना है आज समरसता का चिंतन एक आंदोलन का रूप ले चुका है । यह आंदोलन केवल वैचारिक आन्दोलन नहीं है । यह सामाजिक, सांस्कृति आंदोलन भी है । यह आन्दोलन "न हिन्दु पतितो भवेत् की मान्य की मान्यता व्यवहारिक परिणाम है ।"

आलेख के अंत में इतना ही कहूँगी संत और भक्तों की भक्ति आंदोलन से उसके प्रभाव से समाज का केवल निम्न वर्ग अप्रभावित नहीं रह सकता । आधुनिक विदेशी सभ्यता में दीक्षित एवं भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के पराङ्गमुख कतिपय जनों को उसमें सच्ची मानवता का संदेश सुनने को मिले । इसलिए तो ब्रह्म समाजी रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे विचारवंत आजीवन कबीर बानी से प्रभावित रहे, कबीर की बानियों का अंग्रेजी अनुवाद आपने प्रस्तुत किया । महाराष्ट्र में प्रार्थना समाजियों ने संत तुकाराम की संतबानी को अपने नित्यपाठ में समाविष्ट किया । दिलीप चित्रेजी ने इस अभंग को अंग्रेजी अनुवाद में प्रस्तुत किया । सारांशतः विचार करे तो संतवाणी हो या उसके पथ पर चलने वाली सामाजिक इकाई हो उसकी विशेषता यही है कि सर्वत्र मानवतावाद का इस प्रकार से समानता का समर्थन करती है । उनका सर्वाधिक असाधारण योगदान अपने मानने वाले के वीच जाति के भेदभाव को समाप्त करना । भारत माता की कृपा से भक्ति आंदोलन की तरह सामाजिक अभियान भी आधुनिक विद्वान-विचारवंतों को भी प्रभावित करती रहेगी ।

**अहम ब्रह्मास्मि-तत्वमसि**
**अर्थात्: सभी ब्रह्म के स्वरूप है ।**

**जात-पात की करो बिदाई**
**हिन्दु हिन्दु भाई-भाई ।**

# दक्षिण गुजरात में समरसता यात्रा संपन्न

विश्व हिन्दु परिषद सामाजिक समरसता अभियान के द्वारा दक्षिण गुजरात के वलसाड विभाग में 6 दिवसीय डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर सामाजिक समरसता यात्रा आहवा-डांग जिला, वलसाड जिला तथा नवसारी जिले में दिनांक 20/12/2024 से 25/12/2024 तक 6 दिवसीय यात्रा माता शबरी मंदिर सुबीर डांग से पूज्य संत श्री पी.पी. स्वामी, पुज्य असीमानंद जी, आदिवासी समाज के युवा संत महंत श्री गिरिजानंद सरस्वती महाराज, दक्षिण गुजरात प्रांत अध्यक्ष राजेशभाई राणा, गुजरात क्षेत्र समरसता प्रमुख रसेशभाई रावल, दक्षिण गुजरात प्रांत समरसता प्रमुख अजीतसिंह सोलंकी, यात्रा संयोजक ईश्वरभाई मेहरा, सह संयोजक धर्मेंद्रभाई पटेल तथा बुनकर समाज के अग्रणी श्री हरीशभाई बछाव, ने यात्रा को प्रस्थान करवाया ।

❖ मुख्यतः यात्रा 6 दिन में 67 स्थान पर विशेष रूप से पहुंची । स्थान स्थान पर यात्रा का स्वागत, सामूहिक पुष्पांजलि, सामूहिक आरती तथा यात्रा का स्वागत करने पहुंचे श्रद्धालुओं का तिलक कर स्वागत तथा सभी को प्रसाद वितरण किया गया । ❖ 6 दिन में यात्रा मार्ग में 5600 पत्रिका (हेन्ड बिल) का वितरण, हेन्ड टु हेन्ड, हाथों हाथ किया गया । ❖ जहां-जहां यात्रा का स्वागत हुआ वहां-वहां यात्रा का उद्देश्य जयघोष... "हिन्दु हिन्दु भाई भाई जात-पात की करो विदाई" तथा सभी स्थानों पर संक्षिप्त समरसता के विषय को लेकर भाषण किया गया । ❖ सहभोज: तीन स्थान पर झांखना गांव, मोरजीरा गांव तथा आसमा गांव में पूरे गांव के साथ भंडारा-सहभोज हुआ । कुल तीन स्थान पर 1500 लोगों की भंडारे में सहभागिता रही । ❖ सामूहिक हनुमान चालीसा: यात्रा दरमियां सात स्थान पर हनुमान चालीसा के पाठ हुए । विशेष दो स्थान पर आहवा-डांग, 1000 की संख्या उपस्थिति रही तथा सभी ने सामूहिक रूप से महाप्रसाद ग्रहण किया । दूसरा वीरआंबा हनुमान मंदिर में 1500 की संख्या रही और बड़ी संख्या में माता बहने यात्रा का स्वागत पुष्पांजलि करने पहुंची सभी को प्रसाद वितरण किया गया । समरसता विषय को लेकर वक्तव्य हुआ । ❖ गणदेवी हरिजन वास में केंद्रीय अधिकारी श्री शंकर गायकरजी का प्रेरणादाई प्रवास परिचय हुआ । संत भी साथ में उपस्थित रहे, घर पर चाय पानी हुआ 25 संख्या उपस्थिति रही । ❖ इसी प्रकार बिलिमोरा में मेघवाल बुनकर वास में संपर्क के लिए गए। संत भी साथ में उपस्थित रहे वास में मंदिर दर्शन तथा दो परिवार मैं संपर्क परिचय तथा चाय पानी हुआ । ❖ पारडी में वाल्मिकी वास में यात्रा का स्वागत सामूहिक आरती पुष्पांजलि की गई वाल्मीकि समाज के अग्रणी विशेष रूप से उपस्थित रहे। ❖ वलसाड के शहीद चौक वाल्मिकी वास में यात्रा का भव्य स्वागत किया गया । सामूहिक आरती, पुष्पांजलि तथा रामधुन के बाद जाहेर सभा संपन्न हुई । वाल्मीकि समाज की बेटी जिसे हॉकी में मेडल मिला था उसका विहिप के द्वारा सम्मान किया गया । कुल 200 संख्या उपस्थिति रही । ❖ डांग में ओलंपिक मेडल विजेता सुनीता गायकवाड के माता-पिता का भी यात्रा दरमियां पुष्पहार पहनाकर सम्मान किया गया तथा उनके द्वारा भी आरती पूजा की गई । ❖ वलसाड के वेजलपुर में यात्रा का ढोल नगाड़े बजाकर, पटाखे फोड़ कर भव्य स्वागत किया गया तथा पूरे नगर के लोगों ने सामूहिक आरती पुष्पांजलि तथा रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम रास गरबा किया । किन्नर समाज भी विशेष रूप से इसमें सम्मिलित हुआ । ❖ सेलवासा, नरोली में विद्यालय के 300 बच्चों ने रथ यात्रा में पुष्पांजलि अर्पण की तथा भारत माता का जय घोष किया । ❖ यात्रा दरमियां रास्ते में पडने वाले चौराहे पर भगवान बिरसा मुंडा, डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर, स्वामी विवेकानंद, सरदार वल्लभभाई पटेल, पंडित सातवलकर जी की प्रतिमा पर भी पुष्पांजलि की गई । ❖ यात्रा के दौरान अलग-अलग 25 मंदिरों के पास यात्रा का स्वागत, सामूहिक आरती, पुष्पांजलि एवं प्रसाद वितरण किया गया । ❖ आसमा गांव में दोपहर को बड़ी सभा हुई तथा पूरे गांव का सामूहिक सहभोज हुआ (400 संख्या) उपस्थित । ❖ यात्रा में स्थान स्थान पर संघ के पदाधिकारी तथा स्थानिक सांसद, विधायक, सरपंच भी जुड़कर यात्रा का स्वागत एवं पुष्पांजलि अर्पण की । ❖ प्रिन्ट मीडिया इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं सोशल मीडिया पेज पर सुन्दर प्रचार प्रसार हुआ बड़ी संख्या में सोशल मीडिया पर यात्रा का विस्तृत प्रचार हुआ । ❖ यात्रा में कुल सात संत जुड़े तथा कुल 68 स्थान पर समरसता विषय को लेकर संक्षिप्त भाषण हुआ तथा छः स्थानों पर सभा हुई तथा समरसता विषय को विस्तृत रूप से रखा गया । ❖ समारोप: 6 दिवसीय यात्रा का नवसारी जिले के चिखली में समारोप कार्यक्रम रखा गया । पूज्य संत श्री धर्मयुधिष्ठिर जी, ईस्कोन मंदिर, वनवासी संत-महंत श्री गिरिजानंद सरस्वती जी तथा श्री शंकर गायकरजी मुख्य वक्ता रहे। प्रांत मंत्री अजय भाई व्यास, सह मंत्री अश्विनभाई बारोट, क्षेत्रीय समरसता प्रमुख रसेशभाई रावल, प्रांत समरसता प्रमुख अजीतसिंह सोलंकी, बजरंग दल प्रांत संयोजक मयूर कदम तथा वलसाड विभाग के प्रमुख पदाधिकारि एवं नवसारी जिले के सभी कार्यकर्ता बंधु तथा समाज अग्रणी बड़ी संख्या में विशेष रूप से उपस्थित रहे समारोह के अंत में समरसता विषय को लेकर सभी ने कार्य करने का मन बनाया तथा पधारे हुए सभी आमंत्रित मेहमानों ने सामूहिक जलपान ग्रहण किया ।

***(अहेवाल : रसेशभाई रावल, विश्व हिंदू परिषद सामाजिक समरसता अभियान, गुजरात क्षेत्र समरसता प्रमुख)***

# भगवान बिरसा मुण्डा : संघर्ष, बलिदान और प्रेरणा

– राम कुमार सिंह

भारत वर्ष के विभिन प्रांतों में बसी लगभग 750 जनजातियाँ जब अपने सपूतों की गौरव गाथा को याद करती है, तो एक स्वर्णिम नाम उभरता है 'बिरसा मुण्डा' जिसे आदिवासी- बनवासी बंधु बड़े प्यार से और श्रद्धा के साथ **'धरती आबा भगवान बिरसा मुण्डा'** के रूप में नमन करते हैं । संसद भवन में लगा बिरसा मुण्डा का तैल चित्र और संसद परिसर में लगी उनकी मूर्ति जन-जन को याद दिलाती है कि अल्प शिक्षा, सीमित साधन और आधुनिक सुविधाओं के अभाव के बावजूद आदिवासी समाज ने देश को अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाने के लिए कम योगदान नहीं दिया है । जब तिलक का "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" का मंत्र देश में गूंजा भी नहीं था. न हो गाँधी और सुभाष का नाम राजनीतिक पटल पर आया था, तब झारखंड के छोटानागपुर के पिछड़े आदिवासी इलाके में आजादी का शंखनाद और ब्रिटिश सत्ता को बिरसा मुण्डा ने चुनौती दी ।

छोटानागपुर की धरती ने 15 नवम्बर, 1875 के दिन इस लाल को जन्म दिया । खूंटी थाना के उलिहातु गाँव में बृहस्पतिवार के दिन जन्म लेने के कारण इनका नाम बिरसा पड़ा । पिता सुगना मुण्डा और माता करमी हातु अत्यंत निर्धन परंतु परिश्रमी थे । माता ने खेत में काम करते हुए ही पुत्र को जन्म दिया था और कपड़े के अभाव में पलाटी पत्ते में लपेट कर घर ले आई थी । इनके दो भाई और दो बहने थीं । बिरसा के पिता उनको पढ़ा-लिखा कर 'बड़ा साहब' बनाना चाहते थे ।

बिरसा के पिता ने उन्हें मामा के घर भेज दिया जहाँ बिरसा ने भेड़-बकरियाँ चराते हुए शिक्षक जयपाल नाग से अक्षर ज्ञान और गणित की प्रारंभिक शिक्षा पाई । यहीं पर वे ईसाई धर्म प्रचारक के संपर्क में आए और निर्धनता एवं शिक्षा प्राप्त करने की चाह में उनके परिवार ने ईसाइयत को अपनाया । बिरसा ने ग्यारह वर्ष की आयु में बपतिस्मा लिया और उनका नाम दाऊद पूर्ति तथा पिताजी का नाम मसीह दास रखा गया । उन्होंने बुर्ज के स्कूल में प्राथमिक शिक्षा पाई और आगे की पढ़ाई के लिए चाईबासा के लुथरन मिशन स्कूल में दाखिल हुए । चाईबासा स्कूल मिशनरियों का होने के कारण वहाँ बाइबल शिक्षा पर जोर दिया जाता था । छात्रावास में गोमांस दिया जाता था, मुण्डा परिवार जहाँ बिरसा का बचपन बीता, वहाँ गौ पूजन का विधान था और गोमांस खाना उनकी कल्पना से भी परे थी । बिरसा ने गोमांस खाने से इंकार कर दिया और अपने सहपाठियों को भी इससे परहेज करने के लिए कहा । यह बात जब स्कूल प्रबंधकों तक पहुँची तो बिरसा को फटकार मिली और स्कूल से निकाले जाने की धमकी भी दी गई । मुण्डा जनजाति में शिखा (चोटी) रखने की परंपरा है । जब एक दिन एक सहपाठी ने पीछे से उनकी शिखा कतर डाली तो उनका हृदय हाहाकार कर उठा, आँखों से अनुधारा बहने लगी । स्कूल में मुण्डा लोगों को राक्षसी स्वभाव का बताना तथा उनकी सनातन परंपराओं का उपहास उड़ाना उनको सहन नहीं हुआ । बिरसा ने पादरी नढाटे से कहा, "साहब साहब एक टोपी हैं" यानि अंग्रेज पादरी और अंग्रेजी शासक एक ही हैं । बिरसा ने यह संकल्प लिया कि वह एक भी क्षण चाईबासा में नहीं रुकेगा । बाद में वे बंदगाँव आए तथा वहाँ उनकी भेंट वैष्णव धर्मावलंबी आनंद पाण्डे से हुई ।

जिनसे उन्होंने रामायण, महाभारत, हितोपदेश आदि के बारे में जाना और आगे चलकर उन्होंने मांस खाना छोड़ दिया, वे जनेऊ पहनने लगे, सर पर पीली पगड़ी बाँधने लगे और तुलसी की पूजा करने लगे । अपने समाज के पिछड़ेपन और अज्ञानता को खत्म करने के लिए उन्होंने दृढ़ संकल्प लिया । आदिवासी समाज को विदेशी मिशनरियों, जमीनदारों, अंग्रेज शासकों तथा शोषणकर्ताओं से आजाद करने के लिए संगठित मुक्ति संघर्ष किया । उन्होंने आदिवासी वनवासी समाज को संगठन के सूत्र में बाँधने के लिए कई सभायें की और उलगुलान क्रांति का शंखनाद किया ।

बिरसा के इस शंखनाद से आदिवासी युवक जाग उठे । चलकद क्रांतिकारी आंदोलन का केन्द्र बना । विरोध के प्रथम चरण के रूप में एक असहयोग आंदोलन शुरू किया गया, बिरसा धरती आबा के रूप में जाने जाने लगे । बिरसा के आंदोलन से ब्रिटिश सरकार भौचक्की रह गई । ब्रिटिश सरकार ने तुरंत बिरसा को गिरफ्तार करने का आदेश दिया । पुलिस ने गिरफ्तारी के लिए एक टुकड़ी को चलकद रवाना किया लेकिन गाँव वालों के सशक्त विरोध ने बंदूकों से लैस पुलिस को भी थर्रा दिया । परंतु उन्हें छल प्रपंच से गिरफ्तार कर 25 अगस्त, 1895 को हज़ारीबाग जेल लाया गया । बिरसा की गिरफ्तारी से उनके अनुयायियों में अंग्रेजों से टक्कर लेने की इच्छा और बलवती हो गई । 30 नवम्बर, 1897 को जब बिरसा रिहा हुए तो पूरा वनवासी अंचल जाग उठा । वे सब तीर धनुष के साथ आंदोलन की मांग कर रहे थे । अंग्रेजों से भीषण संग्राम के लिए प्रशिक्षण, संगठन, नीतियाँ और हथियार संग्रह का काम शुरू हुआ । बिरसा और आदिवासी समाज के पूर्वजों का शोषण और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष शुरू हो गया । आदिवासी योद्धा बिरसा के नेतृत्व में कई पुलिस थानों, गिरजाघरों, सरकारी कार्यालयों आदि को आग के हवाले कर दिया गया । जमीनदारों से अपने को मुक्त कराने के लिए लगान न देने और जंगल का अधिकार वापस लेने की बात कही गई । इन सबसे अंग्रेजी हुकूमत बौखला गई और कई विरसाइतों को गिरफ्तार किया गया जिससे आंदोलन और उग्र हो गया ।

9 जनवरी, 1900 के दिन जब बिरसा डोंबारी पहाड़ी पर सभा कर रहे थे, सभी मुण्डा, उराँव, संथाल, खड़िया, हो, माँझी आदिवासी लोग जुटे थे। हज़ारों की संख्या में आदिवासी बिरसा के गीत गाते माथे पर चंदन लगाए, हाथ में सफेद और लाल पताका लिए एकत्रित हुए थे। तब अंग्रेजों को खुफिया सूचना मिली की बिरसा सभा कर रहे हैं। कमिश्नर स्ट्रीट फील्ड डोंबारी पहाड़ी पहुँचे और अंधाधुंध गोलियाँ चलाना शुरू कर दिया। दोनों ओर से संग्राम आरंभ हो गया। तोपों और बंदूकों के सामने तीर, धनुष, कुल्हाड़ी, भाला और पत्थर कहाँ टिक पाते? पूरी डोंबारी पहाड़ी खून से लाल हो गई। बिरसा आंदोलन को जीवित रखने के लिए वहाँ से आग्रह करने पर सुरक्षित जंगल में चले गए। परन्तु भेदियों की मदद से उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 9 जून, 1900 के दिन इस महान आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी की रहस्यमय ढंग से राँची जेल में मृत्यु हो गई। कहा गया कि उन्हें हैजा था लेकिन धारणा यह है कि उन्हें जहर दिया गया। बिरसा आज हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनके जलाए दीप आज भी जल रहे हैं। आज भी वनवासी आदिवासी समाज उनको धरती आबा के रूप में याद करता है। वर्तमान भारत की परिस्थिति में जनजाति समाज उपेक्षा, दरिद्रता, शोषण, विदेशी षड्यंत्रों, दीनता आदि का शिकार बना है।

आवश्यकता है कि जनजाति बंधुओं को गले लगाएँ तभी उनके सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त होगा और भारत पुनः वैभवशाली बनकर विश्व का मार्गदर्शन करेगा और यही भगवान बिरसा मुण्डा के प्रति सच्ची श्रदांजलि होगी।

-लेखक वनवासी कल्याण आश्रम अंडमान-
निकोबार द्वीप समूह के प्रांत प्रचार प्रमुख हैं

# विश्व हिंदू परिषद सामाजीक समरसता अभियान विदर्भ प्रांत बैठक वृत्त

विश्व हिंदू परिषद सामाजीक समरसता विदर्भ प्रांत की बैठक तथा अभ्यास वर्ग शनिवार दि. २८/१२/२०२४ तथा २९/१२/२०२४ को विश्व हिंदू परिषद के संस्थापक सदस्य वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज की कर्मभूमी गुरुकुंज मोझरी जि. अमरावती मे संपन्न हुई। बैठक में शामिल केंद्रीय मंत्री मा. देवजीभाई रावत, मुंबई क्षेत्र समरसता प्रमुख श्री नरेशजी पाटील पूर्ण समय उपस्थीत रहे/ विदर्भ प्रांत के कुल २६ जिल्होसे २४ कार्यकर्ता उपस्थित रहे। बैठक का उद्घाटन श्री गुरुदेव सेवामंडल के सरचिटणीस श्री जनार्धनपंत बोथे गुरुजी तथा श्री प्रशांतजी तितरे के मार्गदर्शन से हुआ। श्री बोथे गुरुजी ने विश्व हिंदू परिषद की स्थापना का उद्देश तथा आवश्यकता पर समयोचीत मार्गदर्शन किया। मा. बोथे. गुरूजी विश्व हिंदू परिषद स्थापना दिन (१९६४) पर राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजजीके साथ निजी सचीव के रूप में सांदीपनी आश्रम ,मुंबई मौजूद थे। विश्व हिंदू परिषद् स्थापना के दिन संत एवं महानुभाव उपस्थीती कि तस्वीर फोटो पूरे भारत में प्रसिद्ध है वह तस्वीर मा. बोथे गुरुजीने खिचवाई, अब गुरुजी कि उम्र ८५ वर्ष की है, शायद विहीप स्थापना के आखिरी साक्षीदार है। बोथे गुरुजी राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के साहित्य और विचारोंको आगे बढा रहे। उन्होने देश के प्रति समर्पित भाव जागृत करने कि आवश्यकता पर बल दिया तथा देश के आंतरिक शत्रु बढने पर चिंता जताई। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज सामाजिक समरसता के पक्षधर रहे, उन्होंने **श्रीगुरुदेव सेवामंडल कि स्थापना वर्ष १९३५ कि और प्रथम पुजारी अनुसूचीत जाती के नियुक्त किए। व्दितीय पुजारी अनुसुचीत जमाती और वर्तमान में विमुक भटके जमाती के पुजारी कार्यरत हैं। समरस हिंदू समाज, भेदभावमुक्त हिंदू समाज निर्माण करने के उद्देश से जनमानस परिवर्तित किया। वर्तमानमें राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजजीके विचारों का अनुसरण भारतीय समाज कर रहा है।** राष्ट्र, धर्म, विश्वशांती के लिए समरसता जरूरी है ऐसा प्रतिपादन किया। मा. प्रशांतजी तितरे ने विश्व हिंदु परिषद के विविध आयाम कि जानकारी एवं आवश्यकता प्रतिपादन किया। श्री देवजीभाई रावत तथा श्री नरेशजी पाटील ने विविध सत्रों में समरसता अभियान कि भूमिका, कार्यकर्ता प्रवास इ. विषयोंपर मार्गदर्शन किया। समारोपीय भाषण मे मा. देवजीभाई रावत ने आज समाज में कुछ लोग जो गलत विमर्श (फेक नरेटीव्ह) फैला रहे है, उनसे निपटने के लिए कार्यकर्ताओं को प्रत्यक्ष समाज में जाकर कार्य करने का आवाहन करते हुए , व्यक्ती जीवन का उदाहरण समाज के सन्मुख पेश करने कि अपील की, द्विदिवसीय बैठक अत्यंत उत्साहपूर्ण रूप से समाप्त होकर सभी कार्यकर्ता पाथेय (ध्येय) लेकर अपने अपने क्षेत्र के लिए रवाना हुए। ***(– अहेवाल : संजय चौधरी - प्रांत समरसता प्रमुख : विदर्भ)***

RAKESH CHEMICALS
(CHHATRAL)

**ASHWIN PATEL** M.: 9376488802
**RAVI PATEL** M.: 9998946815
**CHIRAG PATEL** M.: 9724764292

**HEAD OFFICE :** Rakesh Plaza, 52, Shayona Estate, Opp. Meldi Estate, Prasang Party Plot Road, Gota, Ahmedabad - 380061.
**Ph.:** 079-65444145 - 146 - 147 - 148 **E-mail :** rakeshchem@ymail.com, rakeshchemicals@aol.com
**BRANCH OFFICE :** 4, Bansidhar Complex, Opp. Hotel Amirash, Village : Chhatral, Ta. : Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729
**Ph.:** 02764-234165 **Mobile :** 9376488804

# विश्व हिन्दू परिषद कोंकण प्रांत समरसता अभ्यास वर्ग

– प्रो. मारुती मतलापुरकर (प्रान्त समरसता प्रमुख)

दादर मुंबई सुबह ९ से ५ बुधवार २५ दिसंबर २०२४

*अपेक्षित जिला समरसता प्रमुख, सह प्रमुख, समरसता जिला टोली सदस्य, जिला सह मंत्री (समरसता आयाम पालक)

* उपस्थिती: ३३ जिले २१ जिला में समरसता प्रमुख नियुक्त 5 समरसता प्रमुख, 2 सह प्रमुख, 5 टोळी सदस्य, 4 प्रांत टोळी सदस्य उपस्थित २ जिला सह मंत्री (समरसता पालक)

* आगामी ३ महिनों में मार्च २०२५ तक जिला में.....

१) जिला टोली पुर्ण करना, २) प्रखंड समरसता प्रमुख नियुक्त करना, ३) जिला/प्रखंड में जाती बिरादरी सुची बनाना, ४) SC ST छात्रावास सुची, ५) सहभोज के कार्यक्रम, ६) हिंदू परिवार मित्र जिला में कम से कम १० परिवर, ७) समस्त हिंदू समाज से प्रबुद्ध प्रतिष्ठित,शिक्षित, प्रभावशाली नागरिक सुची बनाना, ८) १२ फरवरी २०२५, श्री संत रोहिदास महाराज जयंती उत्सव विश्व हिन्दू परिषद बेनर तले मनाना ।

* मासिक समरसता प्रांत टोली प्रत्यक्ष बैठक, प्रत्येक महीने के ३रे बुधवार को परिषद कार्यालय में सायं ५.०० ।

* मासिक समरसता व्यापक आभासी (Online) बैठक जिला, प्रांत प्रमुख, सह प्रमुख, टोली समवेत प्रत्येक महीने के ३रे शुक्रवार रात्रि ९ से १० ।

इस अभ्यास वर्ग में मा देवजी भाई रावत केंद्रीय मंत्री, अखिल भारतीय समरसता अभियान प्रमुख, क्षेत्र समरसता प्रमुख नरेशजी पाटील, क्षेत्र सह मंत्री रामुका जी ,प्रांत मंत्री मोहन जी सालेकर, प्रा मारुती मतलापुरकर प्रांत प्रमुख, कृष्णा बांदेकर प्रांत सह प्रमुख, रामचरित यादव, प्रमोद मिश्रा प्रांत टोली सदस्य, उपस्थित रहे ।

* व्यवस्था : माटुंगा जिल्हा सह मंत्री एडवोकेट कुलदिप यादव, सह मंत्री ब्रम्हा, सुनील मेहता और ६ बजरंगी व्यवस्था में पुर्ण समय उपस्थित रहकर संभाली ।

## सामाजिक समरसता अभियान प. महा प्रांत ऐतिहासिक भेट

केंद्रीय सामाजिक समरसता प्रमुख केंद्रीय प्रवक्ता विश्व हिंदू परिषद श्री देवजीभाई रावत, श्री नरेश जी पाटील, मुंबई क्षेत्र समरसता प्रमुख, ॲड सतिश गोरडे प्रांत सह मंत्री व निखील कुलकर्णी प्रांत समरसता प्रमुख, नटराज जगताप प्रांत सत्संग प्रमुख यान्नी आज ज्येष्ठ समाजसेवक, लेखक, पद्मश्री गिरीशजी प्रभुणे यान्चे पुनरुत्थान समरसता गुरुकुलम चिम्चवड या पारधी समाजासाठी सर्वांगीण विकासासाठी चे प्रकल्प व क्रांतिवीर चापेकर बंधू राष्टीय संग्रहालयास भेट दिली की * - मा देवजीभाई यांनी इ ९ वी १०वी मुलांशी सम्वाद साधला विद्यार्थी से वार्तालाप कीया ।

सर्व भरतीय कार्यक्रम के अनुसार ओडिशा पश्चिम प्रान्त का कालाहांडी विभाग में सामाजिक समरसता अभियान द्वारा समरसता यात्रा निकली । विभाग में 2 प्रान्त से 2 रथ 22 दिसम्बर यात्रा शुरू कि । प्रति रथ में 6/7 साधु संत सहित यात्रा दिन में 7/8 स्थान में समरसता का संदेश देने का काम किया । लगवग सारे प्रखण्ड सम्पर्क में आया । हरेक स्थान पर ओडिसा भासा में करपत्रक बपोक स्तर पर वितरित किये । दोनो रथ अलग अलग स्थान होकर 29 दिसम्बर एकत्रित आये और चिचेगुरा में समापन कार्यक्रम किआ । अनेक स्थान पर सहभोज भी हुआ । रास्ते में गांव के लोग रथ में जगन्नाथ देव जी का पूजन किया । प्रान्त मंत्री, संगठन मंत्री, सभापति सहित समरसताके कार्यकर्ताओने अलग अलग स्थान पर भाग लिया । दिनांक 27, 28, 29 तीनदिन क्षेत्र समरसता प्रमुख श्री गौतम सरकार उपस्थित थे ।

# समरसता-यात्रा, उत्तर गुजरात प्रांत

– प्रविण भट्ट (प्रान्त समरसता प्रमुख)

उत्तर गुजरात प्रांत की समरसता यात्रा में आज रोज 17/12/2024 को केंद्रीय मंत्री श्री गोपाल जी अखिल भारतीय समरसता प्रमुख देव जी भाई रावत, "नोरता धाम" के संत श्री दोलतराम बापू,पुज्य संत श्री मुनी बापू, गुजरात क्षेत्र समरसता प्रमुख रसेश भाई रावल, प्रांत प्रमुख प्रविण भाई तथा मेहसाणा जिला के सभी प्रमुख कार्यकर्ता विशेष रूप से यहां महाआरती में उपस्थित रहे । गुजरात में महेसाणा विभाग तथा वलसाड विभाग में समरसता यात्रायों को मिला भव्य प्रतिसाद ।

विश्व हिन्दु परिषद के द्वारा सामाजिक समरसता का संदेश देती समरसता यात्राओंका प्रारंभ से गुजरात के महेसाणा विभाग से तथा वलसाड यात्रा का प्रारंभ दिनांद पू. संतो के कर कमलों से प्रारंभ हुआ ।

उत्तर गुजरात की यात्रा का समापन दिनांक 21 दिसम्बर के दिन महेसाणा विभाग के कडी-नंदासण गाम में समरसता युक्त वातावरण में समापन हुआ । समाज में जाति-भेदभाव-उंच-नीच गरीब-अमीर बिच्च के अंतर-भेदभाव को दूर करने हेतु यह समरसता यात्राओं का आयोजन गुजरात के गाँव-गाँव में यात्राओं का भ्रमण-जनजागरण हुआ था । जात-पात की करो बिदाई-हम सब हिन्दु एक का संदेश यात्रा के समापन कार्यक्रम में हिन्दु समाज प्रत्येक नगर के ग्रामजन तथा विश्व हिन्दु परिषद के कार्यकर्ता बडी संख्या में उपस्थित रहकर यात्राओं को सफल बनाया ।

# “पू. शंकर स्वामीजी का प्रेरणा-रुप कदम”

तेलंगणा राज्य-दिकाराबाद जिला **“तांडूर”** श्री मनिकेश महासंस्थानम् पीठाधीश श्री शंकर स्वामी जी द्वारा आयोजित समानता ही सनातन धर्म” कार्यक्रम में **इतिहास में प्रथवबार 108 दलित समुदाय की बहनों को पू. शंकर स्वामी श्री ने पादपूजा किया** और अपने व्यवहार से हिन्दु समाज में कृतिरूप समरसता संदेश दिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में गौ पूजन तथा अनुसूचित जाति-जनजाति-घुमंतु जाति के लोंगो की सामूहिक पूजा-अर्चन तथा समरसता यज्ञ किया गया सभी जाति-बिरादरी को लोगो ने यज्ञ आहुति में सहभागीता की। बाद में पू. शंकर स्वामी जी ने सभी बहनों की “पाद पूजा” किया-सभी को वस्त्र दान किया गया - तथा सभीने सामूहिक सहभोज कर-प्रसन्नता से “हिन्दु समाज की एकता समरसता” संकल्प लीय। यह कार्यक्रम में पूर्व - संघ सह कार्यवाह मा.श्री भागैया जी तथा अ.भा. समरसता प्रमुख श्री देवजीभाई रावत विशेष उपस्थित रहे - प्रसंग अनुरूप प्रबोधन हुआ।

**पादपूजा सहभागी नाम**

(1) P. Srinivas / P. Sunada, (2) P. Yacduppa / P. Amrvthamma, (3) P. Mahelh / P. Swapna, (4) P. Balappa / P Bhagya, (5) P. Narencler / P. Manjula, (6) J. Srinivar / J. Anuradha, (7) Anil Brother, (8) Manjula w/o Chandrr, (9) Laxmi w/o Srinivas, (10) Lalictua w/o Rajes, (11) Swarnalalta w/o Rajes, (12) Nenali w/o Svinivos, (13) Laxmi w/o Dostappa, (14) Mamatha w/o Sravan, (15) Yadamma w/o Nagappa, (16) Saroja w/o Kistaiah (MCT), (17) Joyes Svee w/o Mahesh, (18) Ningama, (19) Sunitha, (20) Anitha, (21) Savithri, (22) Nagaveni, (23) Gopamma, (24) Nagamma, (25) D. Ramulamma w/o Sammaiah, (26) D. Anasuya w/o Kistappa, (27) Sangeetha w/o Srinivas, (28) K. Renila w/o Hanmanthy, (29) D. Venkatammna w/o Raju, (30) D. Rupwdevi w/o Shivab, (31) M. Indira w/o Suri.

# दक्षिण कर्णाटक प्रांत मैसुर विभाग समरसता यात्रा

**– श्री नरसिंहमूर्ति (प्रान्त समरसता प्रमुख - कर्नाटक)**

दि. 15-12-2024 समरसता रथ यात्रा जगत प्रसिद्ध चामुंडी माता मंदिर से सेंकडो कार्यकर्ता-धर्म प्रेमि जनता तथा पूजनीय संतो की उपस्थिति में यात्रा का प्रारंभ हुआ। यात्रा-प्रस्थान कार्यक्रम में प.पू. श्री आदिजूनगिरी स्वामी जी, श्री श्री सोमेश्वरानंद स्वामीजी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक प्रांत कार्यकारणी सदस्य श्री माँ वि वेंकटरमन जी, विभाग संयोजक श्री वासुदेव भाट जी, मैसूर विश्व हिन्दु परिषद जिला अध्यक्ष श्री के महेश कामथ, समरसता विभाग प्रमुख श्री नरसिंह मूर्ति श्री, कार्यध्यक्ष श्री वेंकटरमन जी, अ. भा. वि.हि.प. मंत्री श्री नागराजनजी, तथा अधिवक्ता श्री राजूजी उपस्थित थे।

श्री श्री सोमेश्वरानंद स्वामीजी ने कहा हम सब को विभाग एक होना चाहिये, सब को हिन्दु के नाम से ही बुलाना चाहिये एसा अपने प्रास्ताविक प्रवचन में कहा।

विश्व हिन्दु परिषदके जिला अध्यक्ष श्री महेश कामथ जी ने समरसता यात्रा का उदेश्य तथा वि.हि.प. के समस्त हिन्दु एकता कार्यो के बारे में बाताया, उन्होंने कहा कि हमे जाति-जाति में लडना - संघर्ष करना बंध करना चाहिए यह आझकी अत्यंत महत्व की आवश्यकता है। हम सब को एक ही मंचपर लाकर हिन्दु एकता खडी चाहिये।

समरसता रथयात्रा प्रस्थान के बाद रथ-मैसूर जवका परिशिष्ट जाति बाद अशोकपुरम में 5 दलित बंदुओं का “पादपूजा” कर सामाजिक समरसता अपने व्यवहार से एकता का संदेश दिया। सेवावस्ती के लोगो ने कहा कि एसा मान-सन्मान हमारा आज-तक कीसीने नहि किया - सभी सेवावस्ती के लोग अत्यंत आनंद-विभोर हो गये - वहाँ से यात्रा कर्क शोलदिया - इस्कोन मंदिर में - भजन-नृत्य के बाद सभी ने सामूहिक सहभोज किया। वहाँ से यात्रा कुदुरे सेवा वस्ती में पहुंची - गणपति सच्चिदानंद आश्रम में रथ-यात्रा का रात्री निवास हुआ। दूसरे दिन मंदिर के पू. स्वामी श्री विजयानंद स्वामीजीने सेंकडो भक्तजन-कार्यकर्ता उपस्थिति में रथयात्रा को आगे रूट के लिये प्रस्थान करवाया।

वहाँ से यात्रा कुरुबाहल्ली - सेवावस्ती में हर घर से समरसता यात्रा को हर घर से पुष्पवर्षा - 1000 घरो से पुष्पवर्षा नगरजनो ने कर रथ-यात्रा का स्वागत किया। वहाँ से यात्रा गांधीनगर सेवावस्ती, सिदूप्पाजी प्रसाद ग्रहण के बाद धर्मसभा संप्पन के बाद यात्रा आगे मंजुनाथपुर, एम. स्त्रीनगर - में सहभोज कार्यक्रम हुआ। वहाँ से रथयात्रा साम 7 बजे चामराजनगर पहुंचा - हर स्थानो पर हृदय से रथयात्रा का स्वागत किया गया तथा हम सब को जाति-भेद समाप्त कर हिन्दु एक होना जरूरी है एसा समरसता संदेश यात्राओं के माध्यम से समाज में जागरण किया गया।

सामाजिक समरसता समारोह विश्व हिन्दु परिषद बस्ती विभाग दिनांक १०-११-२०२४ सरस्वती विद्यामंदिर, रामबाग में सम्पन हुआ।

समरसता संगोष्ठी दिनांक २७-१२-२०२४ नडियाद में डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर होल में आयोजीत हुआ।

दिनांक २३-१२-२०२४ समरसता संगोष्ठी पूणे महानगर के सभागृहमें आयोजीत हुआ।

दिनांक २३-१२-२०२४ समरसता संगोष्ठी कोकण प्रान्त कोलाबा जिला मुम्बई में आयोजीत हुआ।

दिनांक २१-१२-२०२४ समरसता संगोष्ठी देवगीरि प्रान्त दोंडाईचा प्रखंड में आयोजीत हुआ।

दिनांक २८,२९-१२-२०२४ अखिल भारतीय सोशल मीडि प्रशिक्षण वर्ग नागपुर में सप्पन हुआ।

Registration under Postal Registration No. AHD-C/83/2021-2023 Issued by SSPOS Ahmedabad City Division
Valid upto 31st December 2023. RNI Reg. No. GUJHIN/2016/70892
Permitted to Post at AHD PSO on 16th of Every Month. Published on 10 January - 2025




॥ जय महाराज ॥

श्री संतराम सद्गुरू शरणंमम

# श्री संतराम मंदिर - नडियाद, गुजरात

## ॥ जय महाराज ॥

**प.पू.महंतश्री रामदासजी महाराज**

श्री संतराम मंदिर - नडियाद

**Following service are rendered by the santram Mandir, Nadiad**

**Social Services :**

1. Shree Santram Bhojnalay Annapurna (Free food services)
2. Shree Santram garbh-Sanskar Kendra, Tapovan (Pregnancy Health Care Center)
3. Paankhar Ni Haash (A Center for Senior citizens)
4. Mu' tidham Smashan gruha (Funeral place)
5. Shree Santram Asthi Visarjan Service
6. Shree Santram Viklang Sahay Kendra (A Helping Center for Physically Handicapped people)
7. Shree Santram Sivan class Kendra (A Training Center for Stitching by Ladies)
8. Shree Santram Jyotish Karyalay (An Astrology Center)
9. Relief Activities at the Time of Natural Calamities
10. Providing Grossary to Various Hostels, Hospitals, Vedik Pathshala, parik rammavashi (Travellers of Narmadd River)
11. Proviing Grossary for Need ful people.
12. Hostels For Students
13. Shree Santram Balsanskar Kendra (Childern Class for Inculcating Values and Ethical Life)
14. Shree Santram Yuva sabha (Activity for Youth)
15. Learning of Bhagawat Geeta shlok as Chanting
16. Shree Santram Atithi Gruha (Lodging and Boarding Facilities)
17. Shree Santram Sanskar Vartul
(Various Activities are carried out by the Center for imparting values in youth)

**Educational Services :**

1. Shree Santram Vidhyalay :
Lower K.G., Upper K.G. from 1st to 12th Std (gujrati & English Medium)
2. Shree Narayan Computer Training Center
3. Shree Santram Hostels for Students

**Medical Services :**

1. Shree Santram Eye Hospital (Netra Chikitsalay)
2. Shree Santram Physiotherapy and Health Care Center
3. Shree Santram Radiology and Imaging Center ( Sonography, Digital X-ray, Mammography, O.P.G, CT - Scan and M.R.I.)
4. Shree Santram Pathology Center (Laboratory)
5. Shree Santram Dispensary (Dardi Seva Kendra)
6. Shree Santram E.C.G. Department
7. Shree Santram Honorary Doctor Department
8. Shree Santram Dental Department
9. Shree Santram Ayurvedic Deparment
10. Shree Santram Homeopathy Department
11. Shree Santram Medical Store (Free Medicines)
12. Shree Santram Center for Various Health Related Diagnosys & Treatment Activities & Various

**Surgical Camps**

13. Shree Santram Oxygen Department (Free)
14. Shree Santram Ambulance (Free)
15. C.C. Patel General Hospital, Sojitra.

**Contact us :**

**Shree Santram Mandir**

Nadiad-387001, Gujarat, India Ph.(0268) 25 50005/06

Web : www.santram.info Whatsapp : +919427203131

Email : jaymaharaj@santram.info


Printed, Published and Owned by DEVJIBHAI JEHABHAI RAVAT and Printed at Sudarshan Graphics, Basement, Tirupati Avenue, Pushpakunj Society, Nr. Apsara Cinema, Kankaria, Ahmedabad - 380 028 and published from Dharmada Davakhana, Rabari Vasahat, Nr. Dandi Bridge, Gandhi Ashram, Ahmedabad - 380 027. Editor - DEVJIBHAI JEHABHAI RAVAT

**Book-Post**

प्रतिष्ठा में, ______________________

______________________

______________________

नोध : समरसता सेतु मासिक में प्रकाशित लेख और व्यक्त विचार, दृष्टिकोण वह सम्बन्धित लेखको के हैं।
संपादक तंत्री उससे सहमत होना आवश्यक नहीं। सभी कानूनी विवादोका निपटना अहमदाबाद न्यायालय क्षेत्र अधिकारितामें रहेगा।